प्रश्न - शिलालेखी साहित्य से आप क्या समझते हैं, प्राकृत के शिलालेखी साहित्य के महत्त्व पर प्रकाश डालें।

प्रश्नोत्तर :- प्राकृत शिलालेखी साहित्य और प्राचीन है इसके प्राकृत प्राचीन साहित्य एवं इतिहास के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की ऐसी जानकारी प्राप्त होती है जो अन्य स्रोतों से आज उपलब्ध नहीं है। प्राकृत भाषा का शिलालेखी साहित्य संस्कृत भाषा की शिलालेखों की अपेक्षा कई बातों में विशिष्ट है। क्योंकि प्राकृत शिलालेख सबसे प्राचीन है इस्वी सन् की प्रथम सती तक के समस्त शिलालेख प्रायः प्राकृत में ही है। इस शिलालेख में व्यक्ति के परिचय के साथ साथ उस समय के राजा के नीति पर भी प्रकाश डाला गया है, तथा उस समय के राजाओं द्वारा किये गये प्रजाओं की भलाई के लिए किये गये कार्यों का उल्लेख प्राकृत शिलालेख में सुन्दर ढंग से किया गया है लिखित रूप में मध्य युग का प्राचीन जो भी साहित्य उपलब्ध है वह शिलालेखी प्राकृत का है।

शिलालेखी साहित्य का प्राचीनतम रूप अशोक के शिलालेख में सुरक्षित है। इन शिलालेख की दो लिपियाँ हैं — ब्राह्मी और खरोष्ठी। प्राचीन अभिलेख शिलाखण्डों, शिलापट्टों, स्तम्भों, प्रतिमाओं, स्तूपों, गुफाभित्तियों, ताम्रपत्रों, सिक्कों और मुहरों आदि पर अंकित मिलते हैं। सम्राट अशोक के अभिलेख में प्राकृत भाषा में ही संविधान लिखे गये थे। तप-धर्म तथा शासन सम्बन्धी अनुशासन है।

ब्राह्मी लिपि का प्राचीनतम रूप, जो इस समय हमारे सामने है वह अशोक की राज्यकाल अथवा उससे कुछ ही पहले का है। उसका रूप को देखते हुए यह सहज कहा जा सकता है कि उसके विकास में निश्चय कुछ सौ वर्ष लगे होंगे। अशोककालीन ब्राह्मी लिपि का जो आदिम रूप मिलता है आवश्यकता अनुसार सभी स्थान तथा परिवर्तन होकर अनेक प्रदेशों एवं धाराओं और फिर आगे भारत में प्रचलित प्रायः सभी लिपियों का विकास हुआ है।

ब्राह्मी लिपि के साथ-साथ अशोक के कतिपय अभिलेख खरोष्ठी, आरामेइक तथा यवन लिपि में भी लिखे पाये गये हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उस देश में ब्राह्मी के साथ-साथ इन लिपियों का भी उपयोग एवं प्रचार था। खरोष्ठी का प्रयोग .... अशोक के धर्मलेखों

है। आंतरिक विदेशी आक्रमणों की कार्यवाही तथा रोचक वर्णन किया है। इस प्रकार पल्लवकाल के लेख सिक्कों मोटे तौर पर पूर्व में मथुरा और दक्षिणापथ में सिद्धपुर तक पाया जाता है।

अधिकांश प्राचीन प्राकृत शिलालेख पद्यात्मक अथवा काव्य रूप में लिखे गये हैं। इनमें कवियों के छन्द, अलंकार, रस, प्रतीक आदि शैली को मिलती है। प्राचीन शिलालेखों की विविध शैलियों से सामाजिक और सांस्कृतिक भावों और ~~[illegible]~~ जानी जाती है। इनसे प्राचीन भारत का परिप्रेक्ष्य में ~~[illegible]~~ तत्कालीन सामाजिक विषयों की जानकारी प्राप्त होती है और जीवन पर प्रकाश पड़ता है।